हम सब नेता बन सकती हैं

वीणा शिवपुरी

यह एक दूर प्रदेश की कहानी ज़रूर है, लेकिन बाकी सब बातें वही हैं जो हमारे तुम्हारे गांव में हैं। ग़रीबी, अज्ञानता, महाजन और साहूकारों का राज। इस सबके बीच एक साधारण औरत ने कैसे अपने गांव की शक्ल बदल दी।

दूर उड़ीसा राज्य के छोटे से गांव सिरीगुडा में एक संस्था काम करती थी। उन्होंने गांववालों को सुझाव दिया कि अपना एक अनाज बैंक बनाओ। यानि अनाज का भंडार जिसमें हर सदस्य थोड़ा-थोड़ा अनाज डाले। ताकि वक्त ज़रूरत पर वहां से अनाज उधार ले सकें। इस तरह से महाजन के पास अपना गहना-गांठा और ज़मीन गिरवी नहीं रखनी पड़ेगी।

हिम्मतवर औरत

गांववालों को यह बात समझ में नहीं आई। महाजन ने भी उन्हें उल्टी पट्टी पढ़ा दी। सब लोगों ने इसका विरोध किया। बात ठंडी पड़ गई। यह फ़ैसला लेने वाले मर्द भले ही अज्ञानी हों पर एक औरत सुमनि समझदार थी। उसकी समझ में आ गया कि इस योजना में हम सबका ही भला है।

जब सब लोग कोई काम कर रहे हों तो उससे जुड़ना आसान है। अकेले किसी काम का बीड़ा उठाना बड़ी हिम्मत की बात है। हम सब डरते हैं कि लोग हंसेंगे। अगर काम सफ़ल नहीं हुआ तो मज़ाक बनेगा।

सुमनि ने इस सबकी परवाह नहीं की। एक बार उसने तय कर लिया कि अनाज बैंक बनाना

है तो बस कमर कस के जुट गई। घर-घर जाकर उसने अनाज मांगा। एक फ़सल बीतते तक उसने पैंतालीस किलो अनाज जमा कर लिया था। उस छोटे से भंडार से जब लोगों को मदद मिली तो उन्हें असलियत समझ में आने लगी। धीरे-धीरे सारा गांव उस योजना से जुड़ गया।

एक नया आदर्श

आज सिरीगुडा के अनाज बैंक में दो हज़ार किलो अनाज है। आज किसी गांववाले को अपना घर-द्वार गिरवी रखने की ज़रूरत नहीं। मोटे ब्याज पर महाजन से उधार लेने की ज़रूरत नहीं। सब मिलजुल कर अड़ी में काम आते हैं। उनका आर्थिक शोषण ख़त्म हो चुका है।

सिरीगुडा का सफल उदाहरण देख कर आसपास के गांवों में भी अनाज बैंक बन गए हैं। आज नब्बे गांवों में यह योजना चालू है। इस सफलता का सेहरा सुमनि के सिर बंधता है। किसी नई राह पर पहला कदम उठाने वाली, पहला सवाल पूछने वाली या पहला विरोध करने वाली ही नेता बनती है। सुमनि की तरह हममें और आपमें भी ऐसी नेता छिपी हैं। ज़रूरत उस झिझक को तोड़ने की है।

एक क़दम से शुरू हुई यात्रा

अनाज बैंक से गांव में जो चेतना आई वह आगे बढ़ती ही गई है। आज सिर्फ़ सुमनि ने ही नहीं, बाकी लोगों ने भी पढ़ना लिखना सीखा है। अपने शोषण के प्रति जागरूक हुए हैं। अपनी समस्याएं और मुद्दे लेकर सरकारी अफ़सरों के पास जाने से नहीं झिझकते।

सुमनि को देख कर वहां की और औरतों में भी चेतना आई है। उन सबने मिलकर सरकार से मांग की कि घर और ज़मीन का पट्टा मर्द औरत दोनों के नाम पर हो। पति घर-ज़मीन बेच कर बीबी बच्चों को बेसहारा छोड़ देते हैं।

सुमनि और उसकी सहेलियों ने मिलकर उड़ीसा में औरतों को पूरी मज़दूरी दिए जाने पर ज़ोर दिया। औरतों की सहकारी समितियां बनाने की बात की। यहां तक कि उड़ीसा के मुख्यमंत्री ने सुमनि के साथ दो और आदिवासी औरतों को अपना सलाहकार बनाया है। आखिर आदिवासियों और औरतों के मामलों पर उनसे अच्छी राय और कौन दे सकता है।

डर छोड़ो, झिझक तोड़ो

आखिर सुमनि में ऐसा क्या है जो हममें नहीं। जो कुछ सुमनि कर सकी वह हम क्यों नहीं कर सकतीं। वे भी हम सबकी तरह गांव की सीधी-सादी अनपढ़ औरत थी। बस, यही सोच लो कि पहला कदम लेने वाली औरतें आसमान से नहीं उतरतीं। वे हम लोगों के बीच से ही उठती हैं। बात तो बस ठान लेने की है। औरत एक बार कुछ ठान ले तो कोई उसे डिगा नहीं सकता। आज से ठान लो जो तुम ठीक समझती हो वही करोगी। जो कुछ ग़लत लगता है उस पर ज़रूर बोलोगी। □

नारी की गरिमा पहचानो
तुम अपने हक को अब जानो